ग्रन्थमाला 'बालसंस्कार' : खण्ड ७

टी.वी., मोबाइल एवं इंटरनेट के दुष्परिणामों से बच्चों को बचाएं !

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

सनातन की ग्रन्थसम्पदा	पढें, आचरण में लाएं और आदर्श अभिभावक बनें !

भूमिका

'सनातन की 'बालसंस्कार' ग्रन्थमाला का ग्रन्थ 'टी.वी., मोबाइल और इंटरनेट से होनेवाली हानि से बचें और लाभ उठाएं !' बच्चों की भांति अभिभावकों और शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है । ऐसे में 'अलग से यह लघुग्रन्थ क्यों प्रकाशित किया गया ?' यह प्रश्न कुछ लोगों के मन में उठ सकता है । प्रस्तुत लघुग्रन्थ प्रकाशित करने के उद्देश्य निम्नांकित हैं ।

१. हिन्दू संस्कृति की शिक्षा है कि 'अभिभावक और शिक्षक, बच्चों के प्रथम गुरु हैं ।' जीजामाता और दादोजी कोंडदेव ने बालक शिवाजी पर बचपन में अच्छे संस्कार किए थे; इसलिए वे केवल पन्द्रह वर्ष की आयु में 'एक स्त्री पर बलात्कार के अपराध में रांझा गांव के मुखिया को हाथ-पैर काटने का दण्ड दे सके ।' आगे चलकर इन्हीं शिवाजी ने रामराज्यसमान आदर्श 'हिन्दवी स्वराज्य' की स्थापना की थी । इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य यही है कि आज के अभिभावकों और शिक्षकों को भी प्रकर्षकता से लगे कि 'भावी पीढी को चरित्रवान, राष्ट्रभक्त

और धर्मप्रेमी बनाना', हमारा नैतिक एवं राष्ट्रीय दायित्व है ।'

२. बच्चे अनुकरणप्रिय होते हैं । उन्हें संस्कारों का केवल उपदेश करने से काम नहीं बनता; अपितु इसके लिए अभिभावकों का संस्कारयुक्त आचरण भी आवश्यक है । अभिभावकों के आचरण से बच्चों पर अनायास ही संस्कार होते हैं । इस दृष्टि से 'अभिभावकों का आचरण कैसा हो और कैसा न हो', यह इस लघुग्रन्थ में बताया गया है ।

३. आजकल दूरदर्शन, मोबाइल और इंटरनेट जैसे प्रसारमाध्यमों का झुकाव रज-तम प्रधान, असंस्कृत, विकृत, अश्लील संवाद और दृश्य की ओर है । इससे हिन्दू धर्म और संस्कृति की व्यापक हानि हो रही है । हिन्दू समाज को धार्मिक शिक्षा नहीं मिल रही है, इसलिए भावी पीढी भोगविलास में इतनी अधिक डूब चुकी है कि वह अपना धर्म ही भूल गई है । धर्म राष्ट्र की नींव है । धर्म ही डूब गया, तो राष्ट्र नष्ट होने में समय नहीं लगेगा । इसीलिए 'दूरदर्शन, मोबाइल और

इंटरनेट उपयोग धर्म की शिक्षा देने के लिए कैसे किया जा सकता है' इसकी जानकारी भी इस लघुग्रन्थ में दी गई है । इसका अध्ययन कर, 'भारत की आध्यात्मिक परम्परा की रक्षा करना', अभिभावकों और शिक्षकों का धार्मिक कर्तव्य ही है।

४. बच्चों के मन पर कुसंस्कार करनेवाले तथा राष्ट्र एवं धर्म की हानि करनेवाले कार्यक्रम प्रसारित करनेवाली दूरदर्शन वाहिनियों का प्रबोधन करना, इससे लाभ न होने पर दूरदर्शन वाहिनियों का बहिष्कार करना, इस प्रकारके प्रयत्न करना, अभिभावकों और शिक्षकों का धार्मिक कर्तव्य ही है । इस विषय में भी इस लघुग्रन्थ में मार्गदर्शन किया गया है ।

५. समाज जब ईश्वरप्राप्ति के प्रयत्न अर्थात 'साधना' करता है, तभी वह सात्त्विक बनता है । एक बार व्यक्ति सात्त्विक हो जाने पर, वह साधना से मिलनेवाले आनन्द के कारण रज-तमात्मक बातों में पुनः नहीं फंसता । इसके लिए अभिभावकों और शिक्षकों को भी साधना करनी चाहिए । अभिभावक

और शिक्षक, 'बच्चोंमें साधना करनेके प्रति रुचि क्यों उत्पन्न करें', यह भी इस लघुग्रन्थमें दिया गया है ।

अभिभावक एवं शिक्षक केवल यही लघुग्रन्थ पढेंगे, तो उन्हें जानकारी अधूरी लग सकती है; क्योंकि 'टी.वी., मोबाइल और इंटरनेट की हानि से बचकर लाभ उठाएं !' इस मूल ग्रन्थ के सूत्र इस लघुग्रन्थ में नहीं लिए हैं । अतः पूरी जानकारी के हेतु अभिभावक एवं शिक्षक मूल ग्रन्थ तथा यह लघुग्रन्थ, दोनों पढें ।

'यह लघुग्रन्थ पढकर अभिभावक और शिक्षक बच्चों के प्रति अपना दायित्व एवं कर्तव्य पहचानें तथा भावी पीढी को सब प्रकार से आदर्श बनाने का प्रयत्न करें', यह श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है !' – **संकलनकर्ता**

'धार्मिक कृत्य' ग्रन्थमाला का एक लघुग्रन्थ

आरती उतारने की शास्त्रोक्त पद्धति

अनुक्रमणिका

१. आधुनिक प्रसारमाध्यमों के कारण हुई चिन्ताजनक पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुर्दशा ११

२. अभिभावकों और शिक्षकों में देश की भावी पीढी का निर्माण करने की क्षमता है ! १३

३. अभिभावकवर्ग का दायिव्य १३

४. शिक्षकबन्धुओंका दायित्व ४४

'सनातन संस्था' स्वभाषाभिमानी है । इसलिए हमने 'स्वभाषारक्षा एवं भाषाशुद्धि अभियान' ग्रन्थमाला की रचना की है; तथापि लघुग्रन्थ के शीर्षक तथा सार में कुछ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है; क्योंकि वे समाज में प्रचलित हैं । इन शब्दों के स्थान पर यदि हिन्दी प्रतिशब्दों का उपयोग किया गया होता, तो विशेषतः बच्चों को बहुत कठिन लगता, जिससे वे विषय को समझने में रुचि न लेते । अंग्रेजी शब्द रखने का एकमात्र यही उद्देश्य है; परन्तु आगामी हिन्दू राष्ट्र में इन अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर, स्वदेशी शब्द ही प्रचलित किए जाएंगे ।